43 वर्ष | षष्ठम् अंक | जनवरी 2021

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

507 वाँ सफलतम अंक

इस अंक में...

7 सम्पादकीय
9 राष्ट्रीय घटनाक्रम
15 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
28 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
33 नवीनतम सामान्य ज्ञान
39 खेलकूद
43 मुम्बई इंडियन्स टीम रिकॉर्ड पाँचवीं बार आईपीएल का विजेता
46 रोजगार समाचार
48 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
50 सिविल सेवा (मुख्य) परीक्षा हेतु विशेष—नीतिशास्त्र का सामान्य परिचय
52 युवा प्रतिभाएं

फोकस

59 (1) बेका (BECA) समझौता
60 (2) यूनीफाइड पेमेण्ट्स इण्टरफेस का वैश्वीकरण

विविधा

62 स्मरणीय तथ्य
64 विश्व परिदृश्य
68 ऐतिहासिक स्थल एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्व
70 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
72 विधि निर्णय

लेख

73 **आध्यात्मिक लेख**—सूफीवाद : विहंगम दृष्टिपात
75 **सामयिक लेख**—सतर्क भारत समृद्ध भारत
77 **जीविकोपार्जन लेख**—फूड साइंस और टेक्नोलॉजी में कॅरियर
78 **गैर-परम्परागत ऊर्जा लेख**—स्वच्छ अक्षय ऊर्जा—सौर ऊर्जा
79 **अंतरिक्ष लेख**—स्पेस एक्स ड्रैगन कैप्सूल से उतरे नासा के अंतरिक्ष यात्री : एक नये युग की शुरूआत
81 **कृषि-विधि लेख**—एक राष्ट्र, एक बाजार
84 **कृषि लेख**—फसल जैवसंवर्धन द्वारा पोषण सुरक्षा
87 बिहार राज्य पी.एस.सी. परीक्षा 2020 हेतु बिन्दुवार महत्वपूर्ण तथ्य
108 सार संग्रह

हल प्रश्न-पत्र

111 (i) उ.प्र. लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित समीक्षा अधिकारी/सहायक समीक्षा अधिकारी (प्रा.) परीक्षा, 2020
122 (ii) केन्द्रीय विद्यालय संगठन प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक भर्ती परीक्षा, 2018
132 (iii) आगामी 66वीं बी.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

ऐच्छिक विषय

145 **इतिहास**—माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा आयोजित प्रवक्ता भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
154 **तर्कशक्ति**—आई.बी.पी.एस. आर.आर. बी. ऑफीसर (प्रा.) परीक्षा, 2019
158 **संख्यात्मक योग्यता**—नाबार्ड (ग्रेड-बी) ऑफीसर परीक्षा, 2020

वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान

161 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
164 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता

ज्ञानार्जन के नवीन क्षितिज

166 क्या आप जानते हैं ?
167 अपना ज्ञान बढ़ाइए

श्रेष्ठतर प्रतिभागी

168 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—वाद-विवाद प्रतियोगिता
169 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—मानव विकास में निवेश के बिना आर्थिक विकास असम्पोषणीय और अनैतिक है
171 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—496 का परिणाम
172 अर्द्धवार्षिकांक

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

सम्पादकीय

प्रतिभा को सीमित महत्व दीजिए

"Doing easily what others find difficult is talent; doing what is impossible for talent is genius."

— Henri Frederic Amiel

कुछ युवक-युवतियाँ प्रतिभा के नाम पर आतंकित हो जाते हैं. जब कोई उनको सामान्य प्रतिभा वाले व्यक्तित्व का धनी बता देता है, तो वे एक प्रकार की रुकावट का अनुभव करने लग जाते हैं. अनेक युवक-युवतियाँ तो निराश होकर बैठ जाते हैं, क्योंकि उनके मन में यह धारणा बन जाती है कि वे सामान्य प्रतिभा वाले व्यक्ति हैं और ऐसा व्यक्ति प्रतियोगिता में बहुत कठिनाई से अपना स्थान बना पाता है. क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं, जो जन्म से महान् हो ? प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिभा उजागर करने के लिए श्रम एवं प्रयास करना पड़ता है. प्रतिभा नाम की वृत्ति प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त होती है. यह बात भिन्न है कि प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिभा का विकास भिन्न-भिन्न स्तरों पर होता है. जब प्रतिभा के सन्दर्भ में भी विकास का नियम लागू होता है, तब सामान्य प्रतिभा के नाम पर आप संकोच क्यों करते हैं ?

ध्यातव्य यह है कि कुछ लोग व्यवहार में अपने को बहुत तेज-तर्रार दिखाते हैं और इस प्रकार एक प्रतिभाशाली व्यक्ति की छवि बनाने का प्रयास करते हैं. आप ऐसे व्यक्तियों द्वारा आतंकित होकर हीनभावना का अनुभव न करें. याद रखिए—All that glitters is not gold—चमकने वाली प्रत्येक वस्तु सोना नहीं होती है. आप भी प्रतिभा के धनी हैं. उसको प्रकट होने के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा कीजिए.

प्रतिभाशाली व्यक्ति की पहचान यह है कि वह प्रत्येक कार्य के लिए धैर्यपूर्वक उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करता है. विचारकों के मतानुसार धैर्य के प्रति श्रेष्ठ मनोदशा का नाम प्रतिभा है. इसीलिए यह कहा जाता है कि—Genius does what it must, and talent does what it can अर्थात् प्रतिभावान व्यक्ति सब कुछ कर डालने की अपेक्षा यह सोचता है कि क्या करना आवश्यक है ? आप यदि धैर्यपूर्वक पर्याप्त चिंतन के साथ कोई कार्य करते हैं, तो वह प्रतिभा के समान फलदायक बन जाएगा. आप महान् विभूतियों के जीवन-चरित्रों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन कीजिए. लम्बी अवधि तक कष्ट सहने के उपरान्त वे अपने को उस रूप में प्रकट कर सके थे जिसे हम 'प्रतिभाशाली' कहते हैं. प्रतिभा पेड़ पर लटकने वाले फल के समान सरलतापूर्वक प्राप्तव्य वस्तु नहीं है और न वह मदारी द्वारा प्रकट किए जाने वाले आम के पौधे जैसी वस्तु है. प्रतिभा वह कारयित्री सामर्थ्य है जिसकी उपलब्धि कठिन श्रम एवं अनवरत् प्रयास द्वारा सम्भव होती है. विज्ञान में अनेक आविष्कार प्रदान करने वाले महान् वैज्ञानिक एडीसन का कथन है कि—Genius is one per cent inspiration and ninety nine per cent perspiration. अर्थ "प्रतिभा को उजागर करने में 1 प्रतिशत आन्तरिक प्रेरणा होती है तथा 99 प्रतिशत श्रम-सीकर का योगदान रहता है." जब आप प्राणपन से श्रम करने के लिए उद्यत हैं, तब प्रतिभा के धनी होने न होने की बात ही क्यों करते हैं ? आपको जो सामर्थ्य प्राप्त है, उसको सफल बनाने के लिए किसी दैवी प्रेरणा अथवा अथक पारलौकिक शक्ति की आवश्यकता नहीं है. अपेक्षित है केवल उसको सही दिशा प्रदान करना. जब हमारा श्रम और हमारे प्रयास अपेक्षित दिशा में चलकर अपेक्षित फल देने की स्थिति को प्राप्त हो जाते हैं, तब हम उन्हें प्रतिभा का अभिधान प्रदान कर देते हैं. प्रतिभाशाली व्यक्तित्व की कसौटी यह है कि उसके कथन को सामान्यजन प्रमाण मानने लगता है. कारण यह है कि सामान्यजन की भावनाओं को वाणी प्रदान करना प्रतिभा के क्षेत्र में आता है. जब व्यक्ति अपने उद्देश्य में सफल हो जाता है, तब लोग उसको प्रतिभाशाली के रूप में स्वीकार करने लग जाते हैं.

अमरीका के दार्शनिक लेखक का कथन है कि—If you believe your own thought, believe that what is true for you in your private heart, is true for all men, then you are genius. यदि आप अपने चिंतन में विश्वास करते हैं और आश्वस्त हैं कि जो विचार आपके हृदय को सत्य रूप में स्वीकार है, वह समस्त मनुष्यों के लिए भी सत्य रूप है—तब आप प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं. प्लेटो, मूसा, मिल्टन, गांधी आदि ने समस्त पुस्तक ज्ञान एवं परम्पराओं को एक ओर रखकर अपने निजी विचार व्यक्त किए और वे प्रतिभा के धनी स्वीकार किए गए. आप मौलिक चिंतन कीजिए, जो कुछ पढ़ें, उसको आत्मसात् करके अपेक्षित रस ग्रहण करें. ऐसा करने के उपरान्त आपकी अभिव्यक्ति प्रतिभा की देन कहलाने लगेगी. आपको न तो खोजनी है और न किसी से सीखनी है. आपको केवल अपनी सार्थक अभिव्यक्ति द्वारा उसको प्रमाणित करना है. "प्रतिभा अपने प्रति अडिग ईमानदारी का नाम है." (जैनेन्द्र कुमार). यदि हम अपने प्रति, अपने विचारों के प्रति अडिग रूप से आश्वस्त नहीं है, तो इसका अर्थ है कि हमारे पास अपना कुछ नहीं है, जो कुछ है वह चुराया हुआ है, अथवा उधार का माल है. ऐसी स्थिति में हमें मौलिक चिंतन अथवा प्रतिभावान व्यक्ति के रूप में स्वीकार करने के लिए कोई क्यों तैयार होने लगा ? अतएव आवश्यक यह है कि युवावर्ग गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करे और पुस्तक को आत्मसात् करे तथा उसके आधार पर अपनी अभिव्यक्ति को मौलिक रूप प्रदान करने का प्रयत्न करे. जीवन में प्रतिभा का अपना महत्व अवश्य है, परन्तु विचारणीय यह है कि वह कितने प्रतिशत व्यक्तियों को प्राप्त होती है ? इसके अतिरिक्त वह ईश्वर प्रदत्त वस्तु है और वह बहुत कुछ पूर्व जन्म के कर्मों के परिप्रेक्ष्य में प्राप्त होती है. हम यदि उसी को सर्वस्व मान बैठें और केवल प्रतिभा के भरोसे बैठे रहें, तो हमारे पुरुषार्थ नायक वृत्ति का क्या होगा ? जब प्रतिभा पूर्व जन्मों के कृतकर्मों का फल होती है, तब क्या हम इस जन्म में अपने प्रयासों से उसका निर्माण एवं उसकी उपलब्धि नहीं कर सकते हैं ? प्रतिभा नामक शक्ति हमारे व्यक्तित्व में उसी प्रकार समाहित रहती है जिस प्रकार मेदिनी में सुगंध (सौंधी गंध) समाई रहती है. हम अपने कृतकर्म द्वारा इस सुगंध रूपी प्रतिभा की सुषुप्तावस्था दूर कर सकते हैं.

बेहतर तो यह है कि युवक-युवतियाँ प्रतियोगिता के लिए तैयारी करते समय दो बातों को ध्यान में रखें. प्रतिभा शून्य में जन्म नहीं लेती है, ज्ञान राशि के संचय के साथ स्वतः प्रस्फुटित होती रहती है तथा अधिकांश व्यक्ति सामान्य प्रतिभा के धनी होते हैं. अतएव सामान्य प्रतिभावान व्यक्ति के रूप में आपके मन में न तो किसी प्रकार का संकोच अपेक्षित है और न हीनता का भाव. आप दृढ़ निश्चय के साथ धैर्यपूर्वक अपनी तैयारी कीजिए. प्रतिभा का बीज स्वयं प्रस्फुटित हो जाएगा. Button नामक विचारक का यह कथन मनन करने योग्य है कि धैर्य के प्रति महान् स्वाभाविक रुचि के अतिरिक्त प्रतिभा कुछ नहीं है—Genius is nothing but a great aptitude for patience.

●●●